الجزء ٩

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿۸۸﴾

88. उनकी क़ौम के सरदारों और रईसोंने जो सरकशो मुतकब्बिर थे कहा : ऐ शुऐ़ब ! हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारी मइ़य्यत में ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से बहर सूरत निकाल देंगे या तुम्हें ज़रूर हमारे मज़हब में पलट आना होगा। शुऐ़ब (عليه السلام) ने कहा : अगरचे हम (तुम्हारे मज़हब में पलटने से) बेज़ार ही हों?

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿۸۹﴾

89. बेशक हम अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधेंगे अगर हम तुम्हारे मज़हब में इस अम्र के बाद पलट जाएं कि अल्लाहने हमें इस से बचा लिया है, और हमारे लिए हरगिज़ (मुनासिब) नहीं कि हम उस (मज़हब) में पलट जाएं मगर येह कि अल्लाह चाहे जो हमारा रब है। हमारा रब अज़रूए इ़ल्म हर चीज़ पर मुहीत है। हमने अल्लाह ही पर भरोसा कर लिया है, ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी (मुख़ालिफ़) क़ौम के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۹۰﴾

90. और उनकी क़ौम के सरदारों और रईसोंने जो कुफ़्र (व इन्कार) के मुर्तकिब हो रहे थे कहा : (ऐ लोगो!) अगर तुमने शुऐ़ब की पैरवी की तो उस वक़्त तुम यक़ीनन नुक़्सान उठानेवाले हो जाओगे।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۱﴾

91. पस उन्हें शदीद ज़ल्ज़ले (के अ़ज़ाब) ने आ पकड़ा, सो वोह (हलाक हो कर) सुब्ह अपने घरों में औंधे पड़े रेह गए।

اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۲﴾

92. जिन लोगों ने शुऐ़ब (عليه السلام) को झुटलाया (वोह ऐसे नीस्तो नाबूद हुए) गोया वोह उस (बस्ती) में (कभी) बसे ही न थे। जिन लोगों ने शुऐ़ब (عليه السلام) को झुटलाया (हक़ीक़त में) वोही नुक़्सान उठानेवाले हो गए।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

93. तब (शुऐ़ब عليه السلام) उनसे कनाराकश हो गए और केहने लगे : ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रबके पैग़ामात पहुंचा दिए थे और मैं ने तुम्हें नसीह़त (भी) कर दी थी फिर मैं काफ़िर क़ौम (के तबाह होने) पर अफ़्सोस क्यों कर करूं?

ع ١١ ٩

وَ مَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّاۤ اَخَذْنَاۤ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

94. और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हमने उसके बाशिन्दों को (नबी की तक्ज़ीबो मुज़ाह़िमत के बाइ़स) सख़्ती व तंगी और तक्लीफ़ो मुसीबत में गिरफ़्तार कर लिया ताकि वोह आहो ज़ारी करें।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّ قَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَ السَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

95. फिर हमने (उनकी) बदह़ाली की जगह ख़ुशह़ाली बदल दी, यहां तक कि वोह (हर लिह़ाज़ से) बहुत बढ़ गए। और (नाशुक्री से) केहने लगे कि हमारे बापदादा को भी (उसी तरह़) रंज और राहत पहुंचती रही है सो हमने उन्हें इस कुफ़राने ने'मत पर अचानक पकड़ लिया और उन्हें (उस की) ख़बर भी न थी।

وَ لَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. और अगर (उन) बस्तियों के बाशिन्दे ईमान ले आते और तक़्वा इख़्तियार करते तो हम उन पर आस्मान और ज़मीनसे बरकतें खोल देते लेकिन उन्हों ने (ह़क़ को) झुटलाया, सो हमने उन्हें उन आ'माले (बद) के बाइ़स जो वोह अंजाम देते थे (अ़ज़ाब की) गिरफ़्त में ले लिया।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّ هُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾

97. क्या अब बस्तियों के बाशिन्दे इस बातसे बे ख़ौफ़ हो गए हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब (फिर) रातको आ पहुंचे इस ह़ाल में कि वोह (ग़फ़्लत की नींद) सोए हुए हैं?

اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّ هُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾

98. या बस्तियों के बाशिन्दे इस बात से बेख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब (फिर) दिन चढ़े आ जाए इस ह़ाल में कि (वोह दुनिया में मदहोश हो कर)खेल रहे हों।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ
اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ع ﴿٩٩﴾

ع ١٢ ١٤ ٢

99. क्या वोह लोग अल्लाह की मुख़्फ़ी तदबीर से बेख़ौफ़ हैं पस अल्लाह की मुख़्फ़ी तदबीर से कोई बेख़ौफ़ नहीं हुवा करता सिवाए नुक़्सान उठाने वाली क़ौम के।

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ
الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَاۤ اَنْ لَّوْ
نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100. क्या (येह बात भी) उन लोगों को (शऊरो) हिदायत नहीं देती जो (एक ज़माने में) ज़मीन पर रेहनेवालों (की हलाकत) के बाद (खुद) ज़मीन के वारिस बन रहे हैं कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों के बाइस उन्हें (भी) सज़ा दें और हम उन के दिलों पर (उनकी बद आ'मालियों की वजह से) मुहर लगा देंगे सो वोह (हक़ को) सुन (समझ) भी नहीं सकेंगे।

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا
كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ
اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾

101. येह वोह बस्तियां हैं जिनकी ख़बरें हम आपको सुना रहे हैं और बेशक उनके पास उनके रसूल रौशन निशानियां ले कर आए तो वोह (फिर भी) इस क़ाबिल न हुए कि उस पर ईमान ले आते जिसे वोह पहले झुटला चुके थे इस तरह़ अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ
وَاِنْ وَّجَدْنَاۤ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102. और हमने उनमें से अक्सर लोगों में अ़हद (का निबाह) न पाया और उनमें से अक्सर लोगों को हमने ना फ़रमान ही पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103. फिर हमने उनके बाद मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और उसके (दरबारी) सरदारों के पास भेजा तो उन्होंने उन (दलाइल और मो'जिज़ात) के साथ जुल्म किया फिर आप देखिए कि फ़साद फैलानेवालों का अंजाम कैसा हुआ।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ
رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ﴿١٠٤﴾

104. और मूसा (عليه السلام) ने कहा : ऐ फ़िरऔ़न! बेशक मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़से रसूल (आया)हूं।

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ
اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾

105- मुझे येही ज़ेब देता है कि अल्लाहके बारे में हक़ बात के सिवा (कुछ) न कहूं। बेशक मैं तुम्हारे रब (की जानिब) से तुम्हारे पास वाज़ेह निशानी लाया हूं, सो तू बनी इसराईल को (अपनी ग़ुलामी से आज़ाद कर के) मेरे साथ भेज दे।

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ
بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾

106. उस(फिरऔ़न)ने कहा : अगर तुम कोई निशानी लाए हो तो उसे (सामने) लाओ अगर तुम सच्चे हो।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ
مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

107. पस मूसा(عليه السلام)ने अपना अ़सा (नीचे) डाल दिया तो उसी वक़्त सरीह़न अज़दहा बन गया।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ
لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ ع ٩ ٣

108. और अपना हाथ(गिरेबान में डाल कर) निकाला तो वोह (भी) उसी वक़्त देखनेवालों के लिए (चमकदार) सफ़ेद हो गया।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ
هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾ لا

109. क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले : बेशक येह (तो कोई) बड़ा माहिर जादूगर है।

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ
فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

110. (लोगो!) येह तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकालना चाहता है, सो तुम क्या मश्वरा देते हो?

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي
الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾ لا

111. उन्होंने कहा (अभी) इसके और इसके भाई (के मुआ़मले) को मुअख़्ख़र कर दो और (मुख़्तलिफ़) शहरों में (जादूगरों को) जमा' करने वाले अफ़राद भेज दो।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾

112. वोह तुम्हारे पास हर माहिर जादूगर को ले आएं।

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا
لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾

113. और जादूगर फ़िरऔ़न के पास आए तो उन्होंने कहा : यक़ीनन हमारे लिए कुछ उजरत होनी चाहिए बशर्ते कि हम ग़ालिब आ जाएं।

قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ لَمِنَ

114. फ़िरऔ़नने कहा : हां! और बेशक (आ़म उजरत

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

तो क्या इस सूरत में) तुम (मेरे दरबार की) क़ुरबतवालों में से हो जाओगे।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَ اِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

115. उन जादूगरोंने कहा : ऐ मूसा! या तो (अपनी चीज़) आप डाल दें या हम ही (पहले)डालनेवाले हो जाएं।

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَ اسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۱۶﴾

116- मूसा (عليه السلام)ने कहा : तुम ही (पहले) डाल दो फिर जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को ज़मीन पर) डाला (तो उन्हों ने) लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और वोह ज़बरदस्त जादू (सामने) ले आए।

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۚ ﴿۱۱۷﴾

117. और हमने मूसा (عليه السلام)की तरफ़ वही फ़रमाई कि (अब) आप अपना अ़सा (ज़मीन पर) डाल दें तो वोह फ़ौरन उन चीज़ों को निगलने लगा जो उन्होंने फ़रेब कारी से वज़ा' कर रखी थीं।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَ بَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۚ ﴿۱۱۸﴾

118. पस हक़ साबित हो गया और जो कुछ वोह कर रहे थे(सब) बातिल हो गया।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَ انْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۚ ﴿۱۱۹﴾

119. सो वोह (फ़िरऔ़नी नुमाइन्दे) उस जगह मग़लूब हो गए और ज़लील हो कर पलट गए।

وَ اُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۚ ﴿۱۲۰﴾

120. और (तमाम) जादूगर सजदे में गिर पड़े।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ﴿۱۲۱﴾

121. वोह बोल उठे : हम सारे जहानों के(हक़ीकी) रब पर ईमान ले आए।

رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

122. (जो) मूसा और हारून (अ़लैहि) का रब है।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. फ़िरऔ़न केहने लगा : (क्या) तुम उस पर ईमान ले आऐ हो क़ब्ल इसकेकि मैं तुम्हें इजाज़त देता। बेशक येह एक फ़रेब है जो तुम (सब) ने मिल कर (मुझसे) इस शहर में किया है ताकि तुम इस (मुल्क) से इस के (क़िब्ती) बाशिन्दों को निकाल कर ले जाओ, सो तुम अ़नक़रीब (इसका अंजाम) जान लोगे।

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ
خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ ج

124- मैं यक़ीनन तुम्हारे हाथोंको और तुम्हारे पाँवों को एक दूसरे की उलटी सम्त से काट डालूंगा फिर ज़रूर बिज़.ज़रूर तुम सबको फांसी दे दूंगा।

125. उन्होंने कहा : बेशक हम अपने रब की तरफ़ पलटनेवाले हैं।

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ
رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ ع ١٨ ١٤

126. और तुम्हें हमारा कौन सा अमल बुरा लगा है? सिर्फ़ येही कि हम अपने रबकी (सच्ची) निशानियों पर ईमान ले आए हैं, जब वोह हमारे पास पहुंच गईं। ऐ हमारे रब! तू हम पर सब्र के सरचश्मे खोल दे और हम को (साबित क़दमी से) मुसलमान रहते हुऐ (दुनियासे) उठा ले।

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ
مُوْسٰى وَ قَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى
الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ
سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَ نَسْتَحْىٖ
نِسَآءَهُمْ ۚ وَ اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127. और क़ौमे फ़िरऔन के सरदारों ने (फ़िरऔन से) कहा : क्या तू मूसा और उसकी (इन्क़िलाब पसंद) क़ौम को छोड़ देगा कि वोह मुल्क में फ़साद फैलाएं?और (फिर क्या) वोह तुझ को और तेरे मा'बूदों को छोड़ देंगे? उसने कहा : (नहीं) अब हम उनके लड़कों को क़त्ल कर देंगे (ताकि उनकी मर्दाना अफ़रादी क़ुव्वत ख़त्म हो जाए) और उनकी औरतों को ज़िन्दा रखेंगे (ताकि उनसे ज़ियादती की जा सके) औरबेशक हम उन पर ग़ालिब हैं।

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ
وَ اصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۖ
يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ
وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

128. मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया: तुम अल्लाहसे मदद मांगो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की है वोह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अंजामे ख़ैर परहेज़गारों के लिए ही है।

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا
وَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى
رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَ

129. लोग केहने लगे : (ऐ मूसा!) हमें तो आपके हमारे पास आने से पहले भी अज़िय्यतें पहुंचाई गईं और आपके हमारे पास आने के बाद भी (गोया हम दोनों तरह मारे गए, हमारी मुसीबत कब दूर होगी?) मूसा (عليه السلام) ने (अपनी

يَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع ١٥

क़ौम को तसल्ली देते हुऐ) फ़रमाया: क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और (उसके बाद) ज़मीन(की सल्तनत)में तुम्हें जा नशीन बना दे फिर वोह देखे कि तुम (इक़्तिदार में आ कर) कैसे अ़मल करते हो।

وَ لَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَ نَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

130. फिर हमने अहले फ़िरऔ़न को (क़ेहत के) चंद सालों और मेवों के नुक़्सान से (अ़ज़ाब की) गिरफ़्त में ले लिया ताकि वोह नसीह़त ह़ासिल करें।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَ مَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾

131- फिर जब उन्हें आसाइश पहुंचती तो केहते : येह हमारी अपनी वजह से है, और अगर उन्हें सख़्ती पहुंचती वोह मूसा (عليه السلام) और उनके (ईमान वाले) साथियों की निस्बत बद शगूनी करते, ख़बरदार उनका शगून (या'नी शामते आ'माल)तो अल्लाह ही के पास है मगर उनमें से अक्सर लोग इ़ल्म नहीं रखते।

وَ قَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

132. और वोह (अह्ले फ़िरऔ़न मुतकब्बिराना तौर पर) केहने लगे : (ऐ मूसा!) तुम हमारे पास जो भी निशानी लाओ कि तुम उसके ज़रीए़ हम पर जादू कर सको, तब भी हम तुम पर ईमान लानेवाले नहीं हैं।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَ الْجَرَادَ وَ الْقُمَّلَ وَ الضَّفَادِعَ وَ الدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133. फिर हमने उन पर तूफ़ान, टिड्डियां, घुन, मेंडक और ख़ून (कितनी ही) जुदागाना निशानियां (बतौरे अ़ज़ाब) भेजीं, फिर (भी) उन्होंने तकब्बुरो सरकशी इख़्तियार किए रखी और वोह (निहायत) मुजरिम क़ौम थी।

وَ لَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

134. और जब उन पर(कोई)अ़ज़ाब वाक़े' होता तो केहते : ऐ मूसा! आप हमारे लिए अपने रबसे दुआ़ करें उस अ़हदके वसीले से जो (उसका) आपकेपास है, अगर

عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ
لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ
بَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ ﴿١٣٤﴾

आप हमसे इस अ़ज़ाब को टाल दें तो हम ज़रूर आप पर ईमान ले आएंगे और बनी इसराईल को (भी आज़ाद कर के) आप के साथ भेज देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ
هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾

135- फिर जब हम उनसे उस मुद्दत तक के लिए जिस को वोह पहुंचने वाले होते वोह अ़ज़ाब टाल देते तो वोह फ़ौरन ही अ़हद तोड़ देते।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي
الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا
عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

136. फिर हमने उनसे (बिल-आख़िर तमाम ना फ़रमानियों और बद अ़हदियों का) बदला ले लिया और हमने उन्हें दरिया में ग़र्क़ कर दिया, इस लिए कि उन्होंने हमारी आयतों की (पै दर पै) तक्ज़ीब की थी और वोह उनसे (बिल्कुल) ग़ाफ़िल थे।

وَ اَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا
يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ
وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ
تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَ
دَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَ
قَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿١٣٧﴾

137. और हमने उस क़ौम (बनी इसराईल) को जो कमज़ोर और इस्तेह़्साल ज़दह थी उस सर ज़मीन के मशरिक़ो मग़्रिब (मिस्र और शाम) का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी और (यूं) बनी इसराईल के ह़क़में आपके रबका नेक वा'दा पूरा हो गया, इस वजह से कि उन्होंने (फ़िरऔ़नी मज़ालिम पर) सब्र किया था, और हमने उन (आ़लीशान महल्लात) को तबाहो बरबाद कर दिया जो फ़िरऔ़न और उसकी क़ौमने बना रखे थे और उन चुनाइयों (और बाग़ात) को भी जिन्हें वोह बुलंदियों पर चढ़ाते थे।

وَ جٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ
فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى
اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ
لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ
اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾

138. और हमने बनी इसराईल को समंदर (या'नी बह़रे कुलज़ुम) के पार उतारा तो वोह एक ऐसी क़ौम के पास जा पहुंचे जो अपने बुतों के गिर्द(परस्तिश केलिए) आसन मारे बैठे थे, (बनी इसराईल के लोग)केहने लगे : ऐ मूसा! हमारे लिए भी ऐसा (ही) मा'बूद बना दें जैसे उनके मा'बूद हैं, मूसा (علیہ السلام) ने कहा : तुम यक़ीनन बड़े जाहिल लोग हो।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَ
بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾

139. बिला शुब्हा येह लोग जिस चीज़ (की पूजा) में (फंसे हुए) हैं वोह हलाक हो जानेवाली है और जो कुछ वोह कर रहे हैं वोह(बिल्कुल) बातिल है।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّ هُوَ
فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

140- (मूसा ﷺ ने) कहा : क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा कोई और मा'बूद तलाश करूं, हालांकि उसी (अल्लाह) ने तुम्हें सारे जहानों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है।

وَ اِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ
وَ فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾ ع ١٢ ١٢ ٦

141. और (वोह वक़्त) याद करो जब हमने तुमको अहले फ़िरऔ़न से नजात बख़्शी जो तुम्हें बहुत ही सख़्त अ़ज़ाब देते थे, वोह तुम्हारे लड़कों को क़त्ल कर देते और तुम्हारी लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रबकी तरफ़से ज़बरदस्त आज़माइश थी।

وَ وٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً
وَّ اَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ
رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَ قَالَ
مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ
فِيْ قَوْمِيْ وَ اَصْلِحْ وَ لَا تَتَّبِعْ
سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾

142. और हमने मूसा (ﷺ) से तीस रातों का वा'दा फ़रमाया और हमने उसे (मज़ीद) दस (रातें) मिला कर पूरा किया, सो उनके रबकी (मुक़र्रर कर्दह) मीआ़द चालीस रातों में पूरी हो गई। और मूसा (ﷺ) ने अपने भाई हारून (ﷺ से फ़रमाया : तुम (इस दौरान) मेरी क़ौम में मेरे जानशीन रेहना और (उनकी) इस्लाह करते रेहना और फ़साद करनेवालों की राह पर न चलना (या'नी उन्हें उस राह पर न चलने देना)।

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَ كَلَّمَهٗ
رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ
اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَ لٰكِنِ
انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ
مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا
تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّ

143. और जब मूसा (ﷺ) हमारे (मुक़र्रर कर्दह) वक़्त पर हाज़िर हुवा और उसकेरबने उससे कलाम फ़रमाया तो (कलामे रब्बानी की लिज़्ज़त पा कर दीदार का आरज़ू मंद हुवा और) अ़र्ज़ करने लगा : ऐ रब! मुझे (अपना जल्वह) दिखा कि मैं तेरा दीदार कर लूं, इर्शाद हुवा : तुम मुझे (बराहे रास्त) हरगिज़ देख न सकोगे मगर पहाड़ की तरफ़ निगाह करो पस अगर वोह अपनी जगह ठेहरा रहा तो अ़नक़रीब तुम मेरा जल्वह कर लोगे। फिर जब उसके

خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

रबने पहाड़ पर (अपने हुस्न का) जल्वह फ़रमाया तो (शिद्दते अनवार से) उसे रेज़ह रेज़ह कर दिया और मूसा (عليه السلام) बेहोश हो कर गिर पड़ा। फिर जब उसे इफ़ाक़ह हुवा तो अ़र्ज़ किया : तेरी ज़ात पाक है में तेरी बारगाह में तौबा करता हूं और मैं सबसे पहला ईमान लाने वाला हूं।

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

144- इर्शाद हुवा : ऐ मूसा! बेशक मैं ने तुम्हें लोगों पर अपने पैग़ामात और अपने कलाम के ज़रीए बरगुज़ीदह व मुन्तख़ब फ़रमा लिया। सो मैंने तुम्हें जो कुछ अ़ता फ़रमाया है उसे थाम लो और शुक्र गुज़ारों में से हो जाओ।

وَ كَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۭ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾

145. और हमने उनके लिए (तौरात की) तख़्तियों में हर एक चीज़ की नसीहत और हर एक चीज़ की तफ़्सील लिख दी (है), तुम उसे मज़बूती से थामे रखो और अपनी क़ौम को (भी) हुक्म दो कि वोह उसकी बेहतरीन बातों को इख़्तियार कर लें। मैं अ़नक़रीब तुम्हें ना फ़रमानों का मुक़ाम दिखाऊंगा।

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ وَ اِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَ اِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾

146. मैं अपनी आयतों (के समझने और क़ुबूल करने) से उन लोगों को बाज़ रखूंगा जो ज़मीनमें ना हक़्क़ तकब्बुर करते हैं और अगर वोह तमाम निशानियां देख लें (तब भी) उस पर ईमान नहीं लाएंगे और अगर वोह हिदायत की राह देख लें (फिर भी) उसे (अपना) रास्ता नहीं बनाएंगे और अगर वोह गुमराही का रास्ता देख लें (तो) उसे अपनी राह के तौर पर अपना लेंगे, येह इस वजहसे कि उन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया और उनसे ग़ाफ़िल बने रहे।

وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآءِ
الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ
يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ ع ۱۶

147. और जिन लोगोंने हमारी आयतों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झुटलाया उनके आ'माल बरबाद हो गए। उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वोही जो कुछ वोह किया करते थे।

وَ اتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ
مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ
خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ
وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ
وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۸﴾

148- और मूसा (علیہ السلام) की क़ौमने उनके(कोहे तूर पर जाने के) बाद अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना लिया (जो) एक जिस्म था, उसकी आवाज़ गाय की थी, क्या उन्हों ने येह नहीं देखा कि वोह न उनसे बात कर सक्ता है और न ही उन्हें रास्ता दिखा सक्ता है। उन्होंने उसीको (मा'बूद) बना लिया और वोह ज़ालिम थे।

وقف لازم

وَ لَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا
اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ
يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

149. और जब वोह अपने किए पर शदीद नादिम हुए और उन्होंने देख लिया कि वोह वाक़ई गुमराह हो गए हैं (तो) के हने लगे : अगर हमारे रबने हम पर रह़म न फ़रमाया और हमें न बख़्शा तो हम यक़ीनन नुक़्सान उठानेवालों में से हो जाएंगे।

وَ لَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ
غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا
خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ
اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ
بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ
اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا
يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ
الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۰﴾

150. और जब मूसा (علیہ السلام) अपनी क़ौम की तरफ़ निहायत ग़मो ग़ुस्से से भरे हुए पलटे तो केहने लगे कि तुमने मेरे (जाने के) बाद मेरे पीछे बहुत ही बुरा काम किया है क्या तुमने अपने रबके हुक्म पर जल्दबाज़ी की और (मूसा علیہ السلام ने तौरात की) तख़्तियां नीचे रख दीं और अपने भाई के सर को पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा (तो) हारून (علیہ السلام) ने कहा : ऐ मेरी मां के बेटे! बेशक इस क़ौमने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि(मेरे मना' करने पर) मुझे क़त्ल कर डालें, सो आप दुश्मनों को मुझ पर हंसने का मौक़ा' न दें और मुझे उन ज़ालिम लोगों (के ज़ुमरे) में शामिल न करें।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَ
اَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ
الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ ع ۱۸/۸

151. (मूसा عليه السلام ने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को मुआ़फ़ फ़रमा दे और हमें अपनी रह़मत (के दामन) में दाख़िल फ़रमा ले और तू सबसे बढ़ कर रहम फ़रमानेवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ
سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُفْتَرِيْنَ ﴿۱۵۲﴾

152- बेशक जिन लोगोंने बछड़े को (मा'बूद) बना लिया है उन्हें उनके रबकी तरफ़ से ग़ज़ब भी पहुंचेगा और दुन्यवी ज़िन्दगी में ज़िल्लत भी, और हम इसी तरह इफ़्तिरा पर्दाज़ों को सज़ा देते हैं।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا
مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۫ اِنَّ رَبَّكَ
مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۵۳﴾

153. और जिन लोगोंने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए (तो) बेशक आपका रब उसके बाद बड़ा ही बख़्शनेवाला महरबान है।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ
اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚ وَفِيْ نُسْخَتِهَا
هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

154. और जब मूसा (عليه السلام) का ग़ुस्सा थम गया तो उन्होंने तख़्तियां उठा लीं और उन (तख़्तियों) की तह़रीर में हिदायत और ऐसे लोगों के लिए रह़मत (मज़्कूर) थी जो अपने रबसे बहुत डरते हैं।

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ
رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ
الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ
اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ
اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ
تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ

155. और मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम के सत्तर मर्दों को हमारे मुक़र्रर कर्दह वक़्त (पर हमारे हुज़ूर मा'ज़ेरत की पेशी) के लिए चुन लिया, फिर जब उन्हें (क़ौम की बुराई से मना' न करने पर तादीबन) शदीद जल्ज़लेने आ पकड़ा तो (मूसा عليه السلام ने) अ़र्ज़ किया : ऐ रब! अगर तू चाहता तो इससे पहले ही इन लोगों को और मुझे हलाक फ़रमा देता, क्या तू हमें इस (ख़ता) के सबब हलाक फ़रमाएगा जो हममें से बेवक़ूफ़ लोगों ने अंजाम दी है, येह तो मह़ज़ तेरी आज़माइश है, इसके ज़रीए तू जिसे चाहता है गुमराह

وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ
خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾
وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ
عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ
وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ
فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَ
يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٦﴾
اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ
الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا
عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۫
يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰىهُمْ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَ يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ
يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ
عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ
كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ
عَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ
الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾ ع ١٩ ٩

ठेहराता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमाता है। तू ही हमारा कारसाज़ है, सो तू हमें बख़्श दे और हम पर रह़म फ़रमा और तू सबसे बेहतर बख़्शानेवाला है।

156- और तू हमारे लिए इस दुनिया (की ज़िन्दगी) में (भी) भलाई लिख दे और आख़िरत में (भी) बेशक हम तेरी तरफ़ ताइबो राग़िब हो चुके, इर्शाद हुवा : मैं अपना अ़ज़ाब जिसे चाहता हूं उसे पहुंचाता हूं और मेरी रह़मत हर चीज़ पर वुस्अ़त रखती है, सो मैं अ़नक़रीब उस (रह़मत) को उन लोगों के लिए लिख दूंगा जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं और ज़कात देते रेहते हैं और वोही लोग ही हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं।

157. (येह वोह लोग हैं) जो इस रसूल (ﷺ)की पैरवी करते हैं जो उम्मी (लक़ब) नबी हैं (या'नी दुनिया में किसी शख़्स से पढ़े बिग़ैर मिन्जानिब अल्लाह लोगों को अख़्बारे ग़ैब और मआ़शो मआ़द के उ़लूमो मआ़रिफ बताते हैं) जिन (के अवसाफ़ो कमालात) को वोह लोग अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, जो उन्हें अच्छी बातों का हुक्म देते हैं और बुरी बातों से मना' फ़रमाते हैं और उनके लिए पाकीज़ा चीज़ों को ह़लाल करते हैं और उन पर पलीद चीज़ों को ह़राम करते हैं और उनसे उनके बारे गरां और तौ़क़े (कुयूद) जो उन पर (नाफ़रमानियों के बाइस मुसल्लत) थे, साक़ित फ़रमाते (और उन्हें ने'मते आज़ादी से बेहरा याब करते) हैं। पस जो लोग इस (बरगुज़ीदा रसूल ﷺ) पर ईमान लाएंगे और उनकी ता'ज़ीमो तौक़ीर करेंगे और उन (के दीन) की मददो नुसरत करेंगे और इस नूर (क़ुर्आन) की पैरवी करेंगे जो उनके साथ उतारा गया है, वोही लोग ही फ़लाह़ पानेवाले हैं।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

158. आप फ़रमा दें : ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का रसूल (बन कर आया) हूं जिसके लिए तमाम आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोही जिलाता है और मारता है, सो तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान लाओ जो (शाने उम्मियत का ह़ामिल) नबी है (या'नी उसने अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं पढ़ा मगर जमीए् ख़ल्क़ से ज़ियादा जानता है और कुफ़्रो शिर्क के मुआ़शरे में जवान हुवा मगर बतने मादर से निक्ले हुऐ बच्चे की तरह मा'सूम और पाकीज़ा है) जो अल्लाह पर और उसके (सारे नाज़िल कर्दह) कलामों पर ईमान रखता है और तुम इन्हीं की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पा सको।

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ
بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

159- और मूसा (علیہ السلام)की क़ौम में से एक जमाअ़त (ऐसे लोगों की भी) है जो ह़क़ की राह बताते हैं और उसी के मुताबिक़ अ़द्ल (पर मब्नी फ़ैसले) करते हैं।

وَ قَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا
اُمَمًا ؕ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ
اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ
الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ
مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَ
اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَ
لٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

160. और हमने उन्हें गिरोह दर गिरोह बारह क़बीलों में तक़्सीम कर दिया। और हमने मूसा (علیہ السلام)के पास (येह) वह़ी भेजी जब उससे उसकी क़ौमने पानी मांगा कि अपना अ़सा पथ्थर पर मारो, सो उसमें से बारह चश्मे फूट निक्ले, पस हर क़बीले ने अपना घाट मा'लूम कर लिया, और हमने उन पर अब्र का साइबान तान दिया, और हमने उन पर मन्नो सल्वा उतारा, (और उनसे फ़रमाया) जिन पाकीज़ा चीज़ों का रिज़्क़ हमने तुम्हें अ़ता किया है उसमें से खाओ, (मगर ना फ़रमानी और कुफ़राने ने'मत कर के) उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वोह अपनी ही जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे।

وَ اِذۡ قِيۡلَ لَهُمُ اسۡكُنُوۡا هٰذِهِ
الۡقَرۡيَةَ وَكُلُوۡا مِنۡهَا حَيۡثُ شِئۡتُمۡ
وَقُوۡلُوۡا حِطَّةٌ وَّ ادۡخُلُوا الۡبَابَ
سُجَّدًا نَّغۡفِرۡ لَكُمۡ خَطِيۡٓـٰٔتِكُمۡ ؕ
سَنَزِيۡدُ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۶۱﴾

161. और (याद करो) जब उनसे फ़रमाया गया कि तुम इस शहर (बैतुल मुक़द्दस या अरीहा) में सुकूनत इख़्तियार करो और तुम वहां से जिस तरह चाहो खाना और (ज़बान से) केहते जाना कि (हमारे गुनाह) बख़्श दे और (शहर के) दरवाज़े में सजदह करते हुए दाख़िल होना (तो) हम तुम्हारी तमाम ख़ताएं बख़्श देंगे, अ़नक़रीब हम नेकूकारों को और ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡهُمۡ قَوۡلًا
غَيۡرَ الَّذِىۡ قِيۡلَ لَهُمۡ فَاَرۡسَلۡنَا
عَلَيۡهِمۡ رِجۡزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوۡا
يَظۡلِمُوۡنَ ﴿۱۶۲﴾ ع

162- फिर उनमें से ज़ालिमों ने इस बातको जो उनसे कही गई थी, दूसरी बात से बदल डाला, सो हमने उन पर आस्मान से अ़ज़ाब भेजा इस वजहसे कि वोह ज़ुल्म करते थे।

وَسۡـَٔلۡهُمۡ عَنِ الۡقَرۡيَةِ الَّتِىۡ كَانَتۡ
حَاضِرَةَ الۡبَحۡرِ ۘ اِذۡ يَعۡدُوۡنَ فِى
السَّبۡتِ اِذۡ تَاۡتِيۡهِمۡ حِيۡتَانُهُمۡ يَوۡمَ
سَبۡتِهِمۡ شُرَّعًا وَّيَوۡمَ لَا يَسۡبِتُوۡنَ ۙ
لَا تَاۡتِيۡهِمۡ ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ نَبۡلُوۡهُمۡ بِمَا
كَانُوۡا يَفۡسُقُوۡنَ ﴿۱۶۳﴾

وقف لازم
معانقة النصف

163. और आप उनसे उस बस्ती का हाल दरयाफ़्त फ़रमाएं जो समंदर के किनारे वाक़े' थी, जब वोह लोग हफ़्ते (के दिन के अह्काम) में ह़द से तजावुज़ करते थे (येह उस वक़्त हुवा) जब (उनके सामने) उनकी मछलियां उनके (ता'ज़ीम कर्दह) हफ़्ते के दिन को पानी (की सतह़) पर हर तरफ़से ख़ूब ज़ाहिर होने लगीं और (बाक़ी) हर दिन जिसकी वोह यौमे शंबह की तरह़ ता'ज़ीम नहीं करते थे (मछलियां) उनके पास न आतीं, इस तरह हम उनकी आज़माइश कर रहे थे ब-ईं वजह कि वोह ना फ़रमान थे।

وَاِذۡ قَالَتۡ اُمَّةٌ مِّنۡهُمۡ لِمَ تَعِظُوۡنَ
قَوۡمَا ۙ اللّٰهُ مُهۡلِكُهُمۡ اَوۡ مُعَذِّبُهُمۡ
عَذَابًا شَدِيۡدًا ؕ قَالُوۡا مَعۡذِرَةً
اِلٰى رَبِّكُمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَّقُوۡنَ ﴿۱۶۴﴾

164. और जब उन में से एक गिरोह ने (फ़रीज़ए दा'वत अंजाम देने वालों से) कहा कि तुम ऐसे लोगों को नसीह़त क्यों कर रहे हो जिन्हें अल्लाह हलाक करनेवाला है या जिन्हें निहायत सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है? तो उन्हों ने जवाब दिया कि तुम्हारे रबके ह़ुज़ूर (अपनी) मा'ज़ेरत पेश करने के लिए और इस लिए (भी) कि शायद वोह परहेज़गार बन जाएं।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَ اَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾

165. फिर जब वोह उन (सब) बातों को फ़रामोश कर बैठे जिनकी उन्हें नसीह़त की गई थी (तो) हमने उन लोगों को नजात दे दी जो बुराई से मना' करते थे (या'नी नह्य अ़निल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करते थे) और हमने (बक़िय्या सब) लोगों को जो (अ़मलन या सुकूतन) ज़ुल्म करते थे निहायत बुरे अ़ज़ाब में पकड़ लिया। इस वजह से कि वोह ना फ़रमानी कर रहे थे।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾

166- फिर जब उन्हों ने उस चीज़ (के तर्क करने के हुक्म) से सरकशी की जिससे वोह रोके गए थे (तो) हमने उन्हें हुक्म दिया कि तुम ज़लीलो ख़्वार बंदर हो जाओ।

وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾

167. और (वोह वक़्त भी याद करें) जब आपके रबने (यहूद को येह) हुक्म सुनाया कि (अल्लाह) उन पर रोज़े क़ियामत तक (किसी न किसी) ऐसे शख़्स को ज़रूर मुसल्लत करता रहेगा जो उन्हें बुरी तक्लीफ़ें पहुंचाता रहे। बेशक आपका रब जल्द सज़ा देनेवाला है और बेशक वोह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान (भी) है।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَ بَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَ السَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾

168. और हमने उन्हें ज़मीनमें गिरोह दर गिरोह तक़्सीम (और मुन्तशिर) कर दिया, उनमें से बा'ज़ नेकूकार भी हैं और उन (ही) में से बा'ज़ इसके सिवा (बदकार) भी और हमने उनकी आज़माइश इन्आ़मात और मुश्किलात (दोनों तरीक़ों) से की ताकि वोह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करें।

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ

169. फिर उनके बाद ना ख़ल्फ़ (उनके) जा नशीन बने। जो किताब के वारिस हुए येह (जा नशीन) इस कम तर (दुनिया) का मालो दौलत (रिश्वत के तौर पर) ले लेते हैं और केहते हैं अ़नक़रीब हमें बख़्श दिया जाएगा, हालांकि उसी तरह का मालो मताअ़ और भी उनके पास आ जाए (तो) उसे भी ले लें, क्या उनसे किताबे (इलाही) का येह अ़हद नहीं लिया गया था कि वोह अल्लाह के बारे में ह़क़

لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

(बात) के सिवा कुछ और न कहेंगे और वोह (सब कुछ) पढ़ चुके थे जो उस में (लिखा) था, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं, क्या तुम समझते नहीं हो?

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾

170- और जो लोग किताबे (इलाही) को मज़बूत पकड़े रेहते हैं और नमाज़ (पाबंदी से) क़ाइम रखते हैं (तो) बेशक हम इस्लाह़ करनेवालों का अज्र ज़ाए' नहीं करते।

وَ اِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ ع ۲۱ ۹ ۱۱

171. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब हमने उनके ऊपर पहाड़ को (यूं) बुलंद कर दिया जैसा कि वोह (एक) साइबान हो और वोह (येह) गुमान करने लगे कि उन पर गिरनेवाला है। (सो हमने उनसे फ़रमाया, डरो नहीं बल्कि) तुम वोह (किताब) मज़बूती से (अ़मलन) थामे रखो जो हमने तुम्हें अ़ता की है और उन (अह़काम) को (ख़ूब) याद रखो जो उसमें (मज़कूर) हैं ताकि तुम (अ़ज़ाब से) बच जाओ।

وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۷۲﴾ ۙ

172. और (याद कीजिए) जब आपके रबने अवलादे आदम की पुश्तों से उनकी नस्ल निकाली और उनको उन्हीं की जानों पर गवाह बनाया (और फ़रमाया) क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? वोह (सब) बोल उठे क्यों नहीं? (तू ही हमारा रब है) हम गवाही देते हैं ताकि क़ियामत के दिन येह (न) कहो कि हम इस अ़हद से बे ख़बर थे।

اَوْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۱۷۳﴾

173. या (ऐसा न हो कि) तुम केहने लगो कि शिर्क तो मह़ज़ हमारे आबाओ अज्दाद ने पहले किया था और हम तो उनके बाद (उनकी) अवलाद थे (गोया हम मुजरिम नहीं अस्ल मुजरिम वोह हैं) तो क्या तू हमें उस (गुनाह) की पादाश में हलाक फ़रमाएगा जो अह्ले बातिलने अंजाम दिया था।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾

174. और इसी तरह़ हम आयतों को तफ़्सील से बयान करते हैं ताकि वोह (ह़क़ की तरफ़) रुजूअ़ करें।

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۱۷۵﴾

175- और आप उन्हें उस शख़्स का क़िस्सा (भी) सुना दें जिसे हमने अपनी निशानियां दीं फिर वोह उन (के इल्मो नसीह़त) से निकल गया और शैतान उसके पीछे लग गया तो वोह गुमराहों में से हो गया।

وَ لَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾

176. और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों के इल्मो अ़मल) के ज़रीए़ बुलंद फ़रमा देते लेकिन वोह (ख़ुद) ज़मीनी दुनिया की (पस्ती की) तरफ़ राग़िब हो गया और अपनी ख़्वाहिश का पैरव बन गया, तो (अब) उसकी मिसाल उस कुत्ते की मिसाल जैसी है कि अगर तू उस पर सख़्ती करे तो वोह ज़बान निकाल दे या तू उसे छोड़ दे (तब भी) ज़बान निकाले रहे। येह ऐसे लोगों की मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, सो आप येह वाक़िआत (लोगों से) बयान करें ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें।

سَآءَ مَثَلًا ۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

.177. मिसाल के लिहाज़ से वोह क़ौम बहुत ही बुरी है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और (दर ह़क़ीक़त) वोह अपनी ही जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾

178. जिसे अल्लाह हिदायत फ़रमाता है पस वोही हिदायत पानेवाला है और जिसे वोह गुमराह ठेहराता है पस वोही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَ

179. और बेशक हमने जहन्नम के लिए जिन्नों और इन्सानों में से बहुत से (अफ़राद) को पैदा फ़रमाया वोह दिल (व दिमाग़) रखते हैं (मगर) वोह उनसे (ह़क़ को) समझ नहीं सक्ते और वोह आँखें रखते हैं (मगर) वोह

لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

उनसे (हक़ को) देख नहीं सक्ते और वोह कान (भी) रखते हैं (मगर) वोह उनसे (हक़ को) सुन नहीं सक्ते, वोह लोग चौपायों की तरह हैं बल्कि (उनसे भी) ज़ियादा गुमराह, वोही लोग ही ग़ाफ़िल हैं।

وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَ ذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾

180- और अल्लाह ही के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं, सो उसे उन नामों से पुकारा करो और ऐसे लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों में हक़ से इन्हिराफ़ करते हैं अ़नक़रीब उन्हें उन (आ'माले बद) की सज़ा दी जाएगी जिनका वोह इर्तिकाब करते हैं।

وَ مِمَّنْ خَلَقْنَاۤ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۸۱﴾ ع ۲۲ ۱۰ ۱۲

181. और जिन्हें हमने पैदा फ़रमाया है उनमें से एक जमाअ़त (ऐसे लोगों की भी) है जो हक़ बात की हिदायत करते हैं और उसीके साथ अ़द्ल पर मब्नी फ़ैसले करते हैं।

وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾ ۚ

182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया है हम अ़नक़रीब उन्हें आहिस्ता आहिस्ता हलाकत की तरफ़ ले जाएंगे ऐसे तरीक़े से कि उन्हें ख़बर भी नहीं होगी।

وَ اُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۱۸۳﴾

183. और मैं उन्हें मोह्लत दे रहा हूं, बेशक मेरी गिरफ़्त बड़ी मज़बूत है।

اَوَ لَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸۴﴾

184. क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया कि उन्हें (अपनी) सोह्बत के शर्फ़ से नवाज़नेवाले (रसूल ﷺ) को जुनून से कोई इलाक़ा नहीं? वोह तो (ना फ़रमानों को) सिर्फ़ वाज़ेह् डर सुनानेवाले हैं।

اَوَ لَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّ اَنْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ

185. क्या उन्होंने आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत में और (अ़लावह उनके) जो कोई चीज़ भी अल्लाहने पैदा फ़रमाई है (उसमें) निगाह नहीं डाली और उसमें कि क्या

اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَیِّ حَدِیْثٍۭ
بَعْدَهٗ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

अ़जब है उनकी मुद्दत (मौत) क़रीब आ चुकी हो, फिर उसकेबाद वोह किस बात पर ईमान लाएंगे।

مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ ؕ وَ
یَذَرُهُمْ فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

186. जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसकेलिए (कोई) राह दिखानेवाला नहीं, और वोह उन्हें उनकी सरकशी में छोड़े रखता है ताकि (मज़ीद) भटकते रहें।

یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَیَّانَ
مُرْسٰهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ
رَبِّیْ ۚ لَا یُجَلِّیْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔ
ثَقُلَتْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
لَا تَاْتِیْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ یَسْـَٔلُوْنَكَ
كَاَنَّكَ حَفِیٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا
عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

وقف منزل
وقف لازم

187. येह (कुफ़्फ़ार) आपसे क़ियामत की निस्बत दरयाफ़्त करते हैं कि उसके क़ाइम होने का वक़्त कब है? फ़रमा दें कि उसका इ़ल्म तो सिर्फ़ मेरे रबके पास है, उसे अपने (मुक़र्ररह) वक़्त पर उस (अल्लाह) के सिवा कोई ज़ाहिर नहीं करेगा। वोह आस्मानों और ज़मीन (के रेहनेवालों) पर (शदाइदो मसाइब के ख़ौफ़ के बाइ़स) बोझल (लग रही) है। वोह तुम पर अचानक (ह़ादिसाती तौर पर) आ जाएगी, येह लोग आपसे (इस तरह़) सवाल करते हैं गोया आप उसकी खोजमें लगे हुए हैं, फ़रमा दें कि उसका इ़ल्म तो मह़ज़ अल्लाह के पास है लेकिन अक्सर लोग (इस ह़क़ीक़त को) नहीं जानते।

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ نَفْعًا وَّ لَا
ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ
اَعْلَمُ الْغَیْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ
الْخَیْرِ ۛۚ وَ مَا مَسَّنِیَ السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ
اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ وَّ بَشِیْرٌ لِّقَوْمٍ
یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ ع

معانقة

ع ٢٣ ١٤

188. आप (उनसे येह भी) फ़रमा दीजिए कि मैं अपनी ज़ात के लिए किसी नफ़े' और नुक़्सान का ख़ुद मालिक नहीं हूं मगर (येह कि) जिस क़दर अल्लाहने चाहा, और (उसी तरह़ बिग़ैर अ़ताए इलाही के) अगर मैं ख़ुद ग़ैबका इ़ल्म रखता तो मैं अज़ ख़ुद बहुत सी भलाई (और फ़ुतूह़ात) ह़ासिल कर लेता और मुझे (किसी मौक़े' पर) कोई सख़्ती (और तक्लीफ़ भी) न पहुंचती, मैं तो (अपने मन्सबे रिसालत के बाइ़स) फ़क़त डर सुनानेवाला और ख़ुशख़बरी देनेवाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं।★

[★डर और ख़ुशी की ख़बरें भी उमूरे ग़ैब में से हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला अपने नबी को मुत्तला' फ़रमाता है क्यों कि मिनजानिब अल्लाह ऐसी इत्तिलाअ़ अ़लल ग़ैब के बिग़ैर न तो नुबुव्वतो रिसालत मु-त-हक़्क़िक़ होती है और न ही येह फ़रीज़ा अदा हो सक्ता है, इस लिए आप (ﷺ) की शान में फ़रमाया गया है वमा हु-व अ़-लल ग़ैबि

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِیَسْكُنَ اِلَیْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِیْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّاۤ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَیْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۸۹﴾

189. और वोही (अल्लाह) है जिसने तुमको एक जानसे पैदा फ़रमाया और उसी में से उसका जोड़ बनाया ताकि वोह उससे सुकून ह़ासिल करे फिर जब मर्दने उस (औ़रत) को ढांप लिया तो वोह ख़फ़ीफ़ बोझके साथ ह़ामिला हो गई फिर वोह उसके साथ चलती फिरती रही फिर जब वोह गरां बार हुई तो दोनों ने अपने रब, अल्लाह से दुआ़ की कि अगर तू हमें अच्छा तंदुरस्त बच्चा अ़ता फ़रमा दे तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ारों में से होंगे।

فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِیْمَاۤ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾

190- फिर जब उसने उन्हें तंदुरस्त बच्चा अ़ता फ़रमा दिया तो दोनों उस (बच्चे) में जो उन्हें अ़ता फ़रमाया था उसकेलिए शरीक ठेहराने लगे तो अल्लाह उनके शरीक बनाने से बुलंदो बरतर है।

اَیُشْرِكُوْنَ مَا لَا یَخْلُقُ شَیْـًٔا وَّهُمْ یُخْلَقُوْنَ ﴿۱۹۱﴾

191. क्या वोह ऐसों को शरीक बनाते हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सक्ते और वोह (ख़ुद) पैदा किए गए हैं।

وَ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّ لَاۤ اَنْفُسَهُمْ یَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۲﴾

192. और न वोह उन (मुशरिकों) की मदद करने पर क़ुदरत रखते हैं और न अपने आप ही की मदद कर सक्ते हैं।

وَ اِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا یَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَیْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ

193. और अगर तुम उनको (राहे) हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो तुम्हारी पैरवी न करेंगे। तुम्हारे ह़क़ में बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें (ह़क़ो हिदायत की तरफ़) बुलाओ या

बि-दनीन (अत्तक्वीर : 81:24) (और येह नबी ग़ैब बताने में हरगिज़ बख़ील नहीं) इस क़ुरआनी इर्शाद के मुताबिक़ गैब बताने में बख़ील न होना तब ही मुमकिन हो सक्ता है अगर बारी तआ़ला ने कमाले फ़रावानी के साथ हुज़ूर नबिय्ये अकरम (ﷺ को उ़लूमो अख़बारे ग़ैब पर मुत्तला फ़रमाया हो अगर सिरे से इल्मे गैब अ़ता ही न किया गया हो तो हुज़ूर (ﷺ का ग़ैब बताना कैसा और फिर उस पर बख़ील न होने का क्या मतलब? सो मालूम हुवा कि हुज़ूर ﷺ के मुत्तला अ़लल ग़ैब होने की क़त्अ़न नफ़ी नहीं बल्कि नफ़ा-व-नुक़्सान पर ख़ुद क़ादिरो मालिक और बिज़्ज़ात आ़लिमुल ग़ैब होने की नफ़ी है क्योंकि येह शान सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की है।]

तुम ख़ामोश रहो।

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿۱۹۳﴾

194- बेशक जिन (बुतों) की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो वोह भी तुम्हारी ही तरह (अल्लाह के) मम्लूक हैं, फिर जब तुम उन्हें पुकारो तो उन्हें चाहिए कि तुम्हें जवाब दें अगर तुम (उन्हें मा'बूद बनाने में) सच्चे हो।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾

195. क्या उनके पाँव हैं जिनसे वोह चल सकें, या उनके हाथ हैं जिनसे वोह पकड़ सकें, या उनकी आँखें हैं जिनसे वोह देख सकें या उनके कान हैं जिनसे वोह सुन सकें? आप फ़रमा दें (ऐ काफ़िरो!) तुम अपने (बातिल) शरीकों को (मेरी हलाकत के लिए) बुला लो फिर मुझ पर (अपना) दाव चलाओ और मुझे कोई मोहलत न दो।

اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۱۹۵﴾

196. बेशक मेरा मददगार अल्लाह है जिसने किताब नाज़िल फ़रमाई है और वोही सुलहाअ की भी नुसरतो विलायत फ़रमाता है।

اِنَّ وَلِيِّيَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۹۶﴾

197. और जिन (बुतों) को तुम उसके सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी मदद करने पर कोई क़ुदरत नहीं रखते और न ही अपने आपकी मदद कर सक्ते हैं।

وَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَ لَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۷﴾

198. और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वोह सुन (भी) नहीं सकेंगे, और आप उन (बुतों) को देखते हैं (वोह इस तरह तराशे गए हैं) कि तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं ह़ालांकि वोह (कुछ) नहीं देखते।

وَ اِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۹۸﴾

199. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) आप दरगुजर फ़रमाना इख़्तियार करें, और भलाई का हुक्म देते रहें और जाहिलों से कनारा कशी इख़्तियार कर लें।

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

وَ اِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۰۰﴾

200. और (ऐ इन्सान!) अगर शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा (उन उमूर के ख़िलाफ़) तुझे उभारे तो अल्लाह से पनाह तलब किया कर, बेशक वोह सुननेवाला, जाननेवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ ۚ

201- बेशक जिन लोगोंने परहेज़गारी इख़्तियार की है, जब उन्हें शैतान की तरफ़से कोई ख़याल भी छू लेता है (तो वोह अल्लाह के अम्रो नह्य और शैतान के दज्लो अ़दावत को) याद करने लगते हैं सो उसी वक़्त उनकी (बसीरत की) आँखें खुल जाती हैं।

وَ اِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَىِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾

202. और (जो) उन शैतानों के भाई (हैं) वोह उन्हें (अपनी वस्वसा अंदाज़ी के ज़रीए) गुमराही में ही खींचे रखते हैं फिर उस (फितना परवरी और हलाकत अंगेज़ी) में कोई कोताही नहीं करते।

وَ اِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْ لَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ مِنْ رَّبِّىْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

203. और जब आप उनकेपास कोई निशानी नहीं लाते (तो) वोह केहते हैं कि आप उसे अपनी तरफ़से वज़ा' करके क्यों नहीं लाए? फ़रमा दें : मैं तो महज़ उस (हुक्म) की पैरवी करता हूं जो मेरे रबकी जानिबसे मेरी तरफ़ वह्री किया जाता है येह (क़ुरआन) तुम्हारे रब की तरफ़ से दलाइले क़त्इय्या (का मज्मूआ़) है और हिदायतो रह्मत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۲۰۴﴾

204.और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुना करो और ख़ामोश रहा करो ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِيْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ وَ لَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿۲۰۵﴾

205. और अपने रबका अपने दिल में ज़िक्र किया करो आ़जिज़ी व ज़ारी और ख़ौफ़ो ख़स्तगी से और मियाना आवाज़ से पुकार कर भी, सुब्हो शाम (यादे ह़क़ जारी रखो) और ग़ाफ़िलों में से न हो जाओ।

إِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ يُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

206. बेशक जो (मलाइका मुक़र्रिबीन) तुम्हारे रबके हुज़ूर में हैं वोह (कभी भी) उसकी इबादत से सरकशी नहीं करते और (हमा वक़्त) उसकी तस्बीह़ करते रेहते हैं और उसकी बारगाह में सजदह रेज़ रेहते हैं।

आयातुहा 75 | 8 सूरतुल अन्फ़ालि म-दनिय्यतुन 88 | रुकूआतुहा 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेंशा रहम फ़रमाने वाला है

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١﴾

1- (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आपसे अम्वाले ग़नीमत की निस्बत सवाल करते हैं फ़रमा दीजिए : अम्वाले ग़नीमत के मालिक अल्लाह और रसूल (ﷺ)हैं। सो तुम अल्लाहसे डरो और अपने बाहमी मुआमलात को दुरुस्त रखा करो और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त किया करो अगर तुम ईमानवाले हो।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٢﴾

2. ईमानवाले (तो) सिर्फ़ वोही लोग हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है (तो) उनके दिल (उसकी अ़ज़मतो जलाल के तसव्वुर से) ख़ौफ़ज़दा हो जाते हैं और जब उन पर उसकी आयात तिलावत की जाती हैं तो वोह (कलामे मह़बूब की लिज़्ज़त अंगेज़ और ह़लावत आफ़रीं बातें) उनके ईमान में ज़ियादती कर देती हैं और वोह (हर ह़ाल में) अपने रब पर तवक्कुल (क़ाइम) रखते हैं (और किसी ग़ैर की तरफ़ नहीं तकते)।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ؕ ﴿٣﴾

3. (येह) वोह लोग हैं जो नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता किया है उसमें से (उसकी राह में) ख़र्च करते रेहते हैं।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

4. (ह़क़ीक़त में) येही लोग सच्चे मोमिन हैं, उनके लिए

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۚ ﴿٤﴾

उनके रबकी बारगाह में (बड़े) दरजात हैं और मग़्फ़िरत और बुलंद दरजा रिज़्क़ है।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَ اِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۙ ﴿٥﴾

5- (ऐ ह़बीब!) जिस तरह आपका रब आपको आपके घरसे ह़क़ के (अ़ज़ीम मक़्सद) के साथ (जिहाद के लिए) बाहर निकाल लाया ह़ालांकि मुसलमानों का एक गिरोह (उस पर) नाख़ुश था।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٦﴾

6. वोह आपसे अम्रे ह़क़ में (इस बिशारत के) ज़ाहिर हो जाने के बाद भी झगड़ने लगे (कि अल्लाह की नुसरत आएगी और लश्करे मुह़म्मदी ﷺ को फ़त्ह़ नसीब होगी) गोया वोह मौतकी तरफ़ हांके जा रहे हैं और वोह (मौत को आँखों से) देख रहे हैं।

وَ اِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَ تَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ ﴿٧﴾

7.और (वोह वक़्त याद करो) जब अल्लाहने तुमसे (कुफ़्फ़ारे मक्का के) दो गिरोहों में से एक पर ग़ल्बा व फ़त्ह़ का वा'दा फ़रमाया था कि वोह यक़ीनन तुम्हारे लिए है और तुम येह चाहते थे कि गैर मुसल्ल़ह़ (कमज़ोर गिरोह) तुम्हारे हाथ आ जाए और अल्लाह येह चाहता था कि अपने कलाम से ह़क़ को ह़क़ साबित फ़रमा दे और (दुश्मनों के बड़े मुसल्ल़ह़ लश्कर पर मुसलमानों की फ़त्ह़याबी की सूरत में) काफ़िरों की (क़ुव्वत और शानो शौकत की) जड़ काट दे।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَ يُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۚ ﴿٨﴾

8. ताकि (मा'रेकए बद्र इस अ़ज़ीम कामयाबी के ज़रीए) ह़क़ को ह़क़ साबित कर दे और बातिल को बातिल कर दे अगरचे मुजरिम लोग (मा'रेकए ह़क़ो बातिल की इस नतीजा ख़ेज़ी को) नापसंद ही करते रहें।

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ

9. (वोह वक़्त याद करो) जब तुम अपने रबसे (मदद के लिए) फ़रियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फ़रियाद क़ुबूल फ़रमा ली (और फ़रमाया) कि मैं एक हज़ार पै दर पै

الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝٩

आनेवाले फरिश्तों के ज़रीए तुम्हारी मदद करने वाला हूं।

وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَ لِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝١٠

10- और उस (मदद की सूरत) को अल्लाहने महज़ बिशारत बनाया (था) और (येह) इस लिए कि उससे तुम्हारे दिल मुत्मइन हो जाएं और (हक़ीक़त में तो) अल्लाह की बारगाह से मदद के सिवा कोई (और) मदद नहीं, बेशक अल्लाह (ही) ग़ालिब हिक्मतवाला है।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَ يُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَ يُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَ لِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَ يُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝١١

11. जब उसने अपनी तरफ़ से (तुम्हें) राहतो सुकून (फ़राहम करने) के लिए तुम पर गुनूदगी तारी फ़रमा दी और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि उसके ज़रीए तुम्हें (ज़ाहिरी व बातिनी) तहारत अ़ता फ़रमा दे और तुमसे शैतान (के बातिल वस्वसों) की नजासत को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को (क़ुव्वते यक़ीन) से मज़बूत कर दे और उससे तुम्हारे क़दम (खूब) जमा दे।

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَ اضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝١٢

12. (ऐ हबीबे मुकर्रम! अपने ए'ज़ाज़ का वोह मन्ज़र भी याद कीजिए) जब आपके रबने फ़रिश्तों को पैग़ाम भेजा कि (अस्हाबे रसूल की मदद के लिए) मैं (भी) तुम्हारे साथ हूं, सो तुम (बिशारतो नुसरत के ज़रीए) ईमानवालों को साबित क़दम रखो मैं अभी काफ़िरों के दिलों में (लश्करे मुहम्मदी ﷺ का) रो'बो हैबत डाले देता हूं, सो तुम (काफ़िरों की) गरदनों के ऊपर से ज़र्ब लगाना और उनके एक एक जोड़ कर तोड़ देना।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ۚ وَ مَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝١٣

13. येह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त की और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह (उसे) सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَ اَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

14. येह (अ़ज़ाबे दुनिया) है सो तुम उसे (तो) चख लो और बेशक काफ़िरों के लिए (आख़िरत में) दोज़ख़ का (दूसरा) अ़ज़ाब (भी) है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ ۚ

15- ऐ ईमान वालो! जब तुम (मैदाने जंग में) काफ़िरों से मुक़ाबला करो (ख़्वाह वोह) लश्करे गरां हो फिर भी उन्हें पीठ मत दिखाना।

وَ مَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

16. और जो शख़्स उस दिन उनसे पीठ फेरेगा, सिवाए उसके जो जंग (ही) के लिए कोई दाव चल रहा हो या अपने (ही) किसी लश्कर से (तआ़वुन के लिए) मिलना चाहता हो, तो वाक़िअ़तन वोह अल्लाह के ग़ज़ब के साथ पलटा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है, और वोह (बहुत ही) बुरा ठिकाना है।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَ مَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَ لِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

17. (ऐ सिपाहियाने लश्करे इस्लाम!) उन काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाहने उन्हें क़त्ल कर दिया और (ऐ ह़बीबे मोह़तशिम!) जब आपने (उन पर संगरेज़े) मारे थे (वोह) आपने नहीं मारे थे बल्कि (वोह तो) अल्लाहने मारे थे और येह (इस लिए) के वोह अह़्ले ईमान को अपनी तरफ़ से अच्छे इन्आ़मात से नवाज़े, बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

ذٰلِكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾

18. येह (तो एक लुत्फ़ो एह़सान) है और (दूसरा) येह कि अल्लाह काफ़िरों के मक्रो फ़रेब को कमज़ोर करनेवाला है।

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَ اِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَ لَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَوْ كَثُرَتْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ

19. (ऐ काफ़िरो!) अगर तुम ने फ़ैसला कुन फ़त्ह़ मांगी थी तो यक़ीनन तुम्हारे पास (ह़क़ की) फ़त्ह़ आ चुकी और अगर तुम (अब भी) बाज़ आ जाओ तो येह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है, और अगर तुम फिर येही (शरारत) करोगे (तो) हम (भी) फिर येही (सज़ा) देंगे और तुम्हारा लश्कर तुम्हें हरगिज़ किफ़ायत न कर सकेगा अगरचे कितना ही

مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾ ع ٢ ٩ ١٦

ज़ियादा हो और बेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ ج

20- ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो और उससे रूगर्दानी मत करो ह़ालांकि तुम सुन रहे हो।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾

21. और उन लोगों की तरह़ मत हो जाना जिन्होंने (धोका दही के तौर पर) कहा : हमने सुन लिया, ह़ालांकि वोह नहीं सुनते।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. बेशक अल्लाह के नज़दीक जानदारों में सबसे बदतर वोही बेहरे, गूंगे हैं जो (न ह़क़ सुनते हैं न ह़क़ केहते हैं और ह़क़ को) समझते भी नहीं हैं।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ط وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. और अगर अल्लाह उनमें कुछ भी ख़ैर (की तरफ़ रग़बत) जानता तो उन्हें (ज़रूर) सुना देता, और (उनकी ह़ालत येह है कि) अगर वोह उन्हें (ह़क़) सुना दे तो वोह (फिर भी) रूगर्दानी कर लें और वोह (ह़क़ से) गुरेज़ ही करने वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ج وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. ऐ ईमान वालो! जब (भी) रसूल (ﷺ) तुम्हें किसी काम के लिए बुलाएं जो तुम्हें (जाविदानी) ज़िन्दगी अ़ता करता है तो अल्लाह और रसूल (ﷺ) को फ़रमां बर्दारी के साथ जवाब देते हुए (फ़ौरन) ह़ाज़िर हो जाया करो और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके क़ल्ब के दरमियान (शाने क़ुर्बते ख़ास्सा के साथ) ह़ाइल होता है और येह कि तुम सब (बिल आख़िर) उसी की तरफ़ जमा' किए जाओगे।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ج وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

25. और उस फ़ितने से डरो जो ख़ास तौर पर सिर्फ़ उन लोगों ही को नहीं पहुंचेगा जो तुम में से ज़ालिम हैं (बल्कि इस ज़ुल्म का साथ देनेवाले और उस पर ख़ामोश रेहनेवाले भी उन्ही में शरीक कर लिए जाएंगे) और जान लो कि अल्लाह अ़ज़ाब में सख़्ती फ़रमानेवाला है।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. और (वोह वक़्त याद करो) जब तुम (मक्की ज़िन्दगी में अ़ददन) थोड़े (या'नी अक़ल्लियत में) थे मुल्क में दबे हुए थे (या'नी मआ़शी तौर पर कमज़ोर और इस्तेह़साल ज़दह थे) तुम इस बात से (भी) ख़ौफ़ ज़दह रेहते थे कि (ताक़तवर) लोग तुम्हें उचक लेंगे (या'नी समाजी तौर पर भी तुम्हें आज़ादी और तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल न था) पस (ह़िजरते मदीना के बा'द) उस (अल्लाह)ने तुम्हें (आज़ाद और महफ़ूज़) ठिकाना अ़ता फ़रमा दिया और (इस्लामी हुकूमतो इक़्तिदार की सूरत में) तुम्हें अपनी मददसे क़ुव्वत बख़्श दी और (मुवाख़ात, अम्वाले ग़नीमत और आज़ाद मईशत के ज़रीए़) तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रोज़ी अ़ता फ़रमा दी ताकि तुम अल्लाह की भरपूर बंदगी के ज़रीए़ उसका) शुक्र बजा ला सको।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

27- ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाह और रसूल (ﷺ) से (उनके हुक़ूक़ की अदाएगी में) ख़यानत न किया करो और न आपस की अमानतों में ख़यानत किया करो ह़ालांकि तुम (सब ह़क़ीक़त) जानते हो।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ ع ٣ ٩ ١٧

28. और जान लो कि तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी अवलाद तो बस फ़ितना ही हैं और येह कि अल्लाह ही के पास अजरे अ़ज़ीम है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

29. ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करोगे (तो) वोह तुम्हारे लिए ह़क़्क़ो बातिल में फ़र्क़ करनेवाली हुज्जत (व हिदायत) मुक़र्रर फ़रमा देगा और तुम्हारे (दामन) से तुम्हारे गुनाहों को मिटा देगा और तुम्हारी मगफ़िरत फ़रमा देगा, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ

30. और जब काफ़िर लोग आपके ख़िलाफ़ ख़ुफ़्या साज़िशें कर रहे थे कि वोह आप को क़ैद कर दें या आपको क़त्ल कर डालें या आपको (वतन से) निकाल दें, और (इधर) वोह साज़िशी मन्सूबे बना रहे थे और

الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

(उधर) अल्लाह (उनके मक्र के रद के लिए अपनी) तदबीर फ़रमा रहा था, और अल्लाह सबसे बेहतर मुख़्फ़ी तदबीर फ़रमानेवाला है।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَاۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾

31- और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं (तो) वोह केहते है बेशक हमने सुन लिया अगर हम चाहें तो हम भी उस (कलाम) के मिस्ल केह सक्ते हैं येह तो अगलों की (ख़याली) दास्तानों के सिवा (कुछ भी) नहीं है।

وَ اِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾

32. और जब उन्होंने (ता'नन) कहा : ऐ अल्लाह! अगर येही (क़ुर्आन) तेरी तरफ़ से हक़्क़ है तो (इसकी ना फ़रमानी के बाइस) हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा दे या हम पर कोई दर्दनाक अ़ज़ाब भेज दे।

وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَ اَنْتَ فِيْهِمْ ۚ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. और (दर हक़ीक़त बात येह है कि) अल्लाह को येह ज़ेब नहीं देता कि उन पर अ़ज़ाब फ़रमाए दर आं हाली कि (ऐ हबीबे मुकर्रम!) आप भी उनमें (मौजूद) हों, और न ही अल्लाह ऐसी हालत में उन पर अ़ज़ाब फ़रमानेवाला है कि वोह (उससे) मगफ़िरत तलब कर रहे हों।

وَ مَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْۤا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. (आपकी हिजरते मदीना के बाद मक्का के) उन (काफ़िरों) के लिए और क्या वजह हो सक्ती है कि अल्लाह उन्हें (अब) अ़ज़ाब न दे हालांकि वोह (लोगों को) मस्जिदे ह़राम(या'नी का'बतुल्लाह) से रोकते हैं और वोह उसके वली (या मू-त-वल्ली) होने के अहल भी नहीं, उसके अवलिया (या'नी दोस्त) तो सिर्फ़ परहेज़गार लोग होते हैं मगर उनमें से अक्सर (इस हक़ीक़त को) जानते ही नहीं।

وَ مَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. और बैतुल्लाह (या'नी ख़ानए का'बा) के पास उनकी (नाम निहाद) नमाज़ सीटियां और तालियां बजाने के सिवा कुछ भी नहीं है, सो तुम अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो इस वजह से कि तुम कुफ़्र किया करते थे।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۙ﴿۳۶﴾

36. बेशक काफ़िर लोग अपना मालो दौलत (इस लिए) ख़र्च करते हैं कि (उसके असर से) वोह (लोगों को) अल्लाह (के दीन) की राहसे रोकें, सो अभी वोह उसे ख़र्च करते रहेंगे फिर (येह ख़र्च करना) उनके हक़में पछतावा (या'नी ह़सरतो नदामत) बन जाएगा फिर वोह (गिरफ़्ते इलाही के ज़रीए) मग़लूब कर दिए जाएंगे, और जिन लोगोंने कुफ़्र अपना लिया है वोह दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाएंगे।

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِىْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ ع ۹ ۱۸

37- ताकि अल्लाह (तआ़ला) नापाक को पाकीज़ा से जुदा फ़रमा दे और नापाक (या'नी नजासत भरे किरदारों) को एक दूसरे के ऊपर तले रख दे फिर सबको इकठ्ठा ढेर बना देगा फिर उस (ढेर) को दोज़ख़ में डाल देगा, येही लोग ख़सारह उठानेवाले हैं।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾

38. आप कुफ़्र करनेवालों से फ़रमा दें : अगर वोह (अपने काफ़िराना अफ़्आ़ल से) बाज़ आ जाएं तो उनके वोह (गुनाह) बख़्श दिए जाएंगे जो पहले गुज़र चुके हैं, और अगर वोह फिर वोही कुछ करेंगे तो यक़ीनन अगलों (के अ़ज़ाब दर अ़ज़ाब) का तरीक़ा गुज़र चुका है (उनके साथ भी वोही कुछ होगा)।

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳۹﴾

39. और (अह्ले ह़क़!) तुम उन (कुफ़्रो तागूत के सरग़नों) के साथ (इन्क़िलाबी) जंग करते रहो, यहां तक कि (दीन दुश्मनी का) कोई फ़ितना (बाक़ी) न रेह जाए और सब दीन (या'नी निज़ामे बंदगी व ज़िन्दगी) अल्लाह ही का हो जाए, फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह इस (अ़मल) को जो वोह अंजाम दे रहे हैं, ख़ूब देख रहा है।

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَ نِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۴۰﴾

40. और अगर उन्होंने (इताअ़ते ह़क़ से) रूगर्दानी की तो जान लो कि बेशक अल्लाह ही तुम्हारा मौला (या'नी ह़िमायती) है, (वोही) बेहतर ह़िमायती और बेहतर मददगार है।